वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 146
ISBN 978-93-82071-03-7

नंदीश्वर विधान

–रचयित्री–

तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास की प्रेरणास्रोत

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
''प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

छठा संस्करण	वीर नि. सं. 2538, चैत्र शु. त्रयोदशी	मूल्य
2200 प्रतियाँ	5 अप्रैल 2012, महावीर जयंती	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशक एवं सम्पादक :–

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

प्रथम संस्करण (सन् 1995)-2200 प्रतियाँ, द्वितीय संस्करण (सन् 1999)-1100 प्रतियाँ
तृतीय संस्करण (सन् 2003)-1100 प्रतियाँ, चतुर्थ संस्करण (सन् 2006)-2200 प्रतियाँ
पंचम संस्करण (सन् 2008)-2200 प्रतियाँ

–सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन–

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

आद्य-मिताक्षर

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

मध्यलोक में असंख्यात द्वीप-समुद्र हैं। एक द्वीप को घेरकर समुद्र पुनः द्वीप ऐसी व्यवस्था होने से प्रथम जम्बूद्वीप को लेकर अंत में स्वयंभूरमण समुद्र है। इस पहले जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के आर्यखण्ड में ही वर्तमान में हम और आप लोग रह रहे हैं। इस गोलाकार जंबूद्वीप का विस्तार एक लाख योजन है। इसे चारों ओर से घेर कर दो लाख योजन विस्तृत लवण समुद्र है।

आगे आठवें द्वीप का नाम नंदीश्वर द्वीप है। यह एक सौ त्रेसठ करोड़ योजन विस्तृत है। इसमें चारों दिशाओं में चौरासी हजार योजन विस्तृत एवं इतने ही ऊँचे एक-एक अंजनगिरि हैं। इन पर चार जिनमंदिर हैं। इन एक-एक पर्वत की चारों दिशाओं में एक-एक लाख योजन विस्तृत चौकोन एक-एक बावड़िया हैं। इन बावड़ी के मध्य दश हजार योजन विस्तृत एवं इतने ही ऊँचे एक-एक दधिमुख पर्वत हैं। इन सोलह दधिमुख पर्वतों पर सोलह जिनमंदिर हैं। पुनः इन प्रत्येक सोलह बावड़ियों के चारों कोनों पर एक हजार योजन ऊँचे और इतने ही विस्तार वाले एक-एक रतिकर पर्वत हैं। इनमें से बावड़ी के अभ्यंतर भाग के बत्तीस रतिकर पर्वतों पर जिनमंदिर हैं।

इस प्रकार नंदीश्वर द्वीप के चारों दिशाओं के 1 अंजनगिरि 2 दधिमुख और 8 रतिकर, ऐसे तेरह पर्वतों के तेरह-तेरह जिनमंदिर हैं अतः ये सब 13×4=52 जिनमंदिर हैं।

इन नंदीश्वर विधान में पहले समुच्चय पूजा है। पुनः पूर्व दिशा के तेरह जिनमंदिर की पूजा में 13 अर्घ्य हैं। ऐसे ही दक्षिण दिशा की पूजा में 13 अर्घ्य, पश्चिम दिशा की पूजा में 13 अर्घ्य और उत्तर दिशा की पूजा में 13 अर्घ्य, ऐसे इन चार दिशाओं में 52 अर्घ्य हैं। चार पूर्णार्घ्य हैं और पाँच पूजाओं की पाँच जयमालाएं हैं।

आष्टान्हिक पर्व–

आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास में शुक्ल पक्ष में अष्टमी को लेकर पूर्णिमा तक ऐसे आठ दिन को आष्टान्हिक पर्व या नंदीश्वर पर्व कहते हैं। यह

पर्व अनादिनिधन है। इन दिनों में इन्द्रगण असंख्य देव-देवियों के साथ वहाँ नंदीश्वर द्वीप में जाकर आठ दिनों तक चौबीस घंटे अखण्ड पूजा करते हैं।

मनुष्य लोगों में चाहे चारण ऋद्धिधारी मुनि हों, चाहे विद्याधर ये लोग भी ढाई द्वीप से बाहर नंदीश्वर द्वीप में नहीं जा सकते हैं। अतएव ये सभी मनुष्य, मुनिगण और श्रावकगण यहीं पर नंदीश्वर द्वीप के जिनमंदिरों की, उनमें विराजमान जिनबिंबों की स्तुति, वंदना और पूजा करते हैं।

इन आष्टान्हिक पर्वों में नाना प्रकार से–उपवास आदि से व्रत भी किये जाते हैं। इन पर्वों में सिद्धचक्र विधान, इन्द्रध्वज विधान, कल्पद्रुम विधान, तीनलोक विधान, सर्वतोभद्र विधान आदि विधानों को किया जाता है। सभी विधानों में सिद्ध भगवान या पंचपरमेष्ठी की उपासना की जाती है। इन्द्रध्वज विधान में तो मध्यलोक के समस्त अकृत्रिम जिनमंदिरों की पूजा होती है, ऐसे ही तीनलोक विधान, सर्वतोभद्र विधान में भी मध्यलोक के जिनमंदिरों की पूजाएं हैं। फिर भी नंदीश्वर पर्व में खासकर नंदीश्वर द्वीप के जिनमंदिरों की पूजन करना ही चाहिए।

इस विधान में पाँच पूजाओं में संक्षेप से नंदीश्वर द्वीप के बावन जिनमंदिरों की पूजा की गई है। इस विधान को आठ दिन तक प्रतिदिन करना चाहिए। इसका मंत्र निम्नलिखित हैं-

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थद्वापंचाशज्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

इस मंत्र का अनुष्ठान करके अंत में दशमांश आहुति करना चाहिए। अर्थात् अग्निकुण्ड में हवन करना चाहिए।

जो भव्य नंदीश्वर पर्व के दिनों में या कभी भी इच्छानुसार अकृत्रिम जिनप्रतिमाओं की भक्ति से यह नंदीश्वर विधान करेंगे। वे नियम से अगले भव में देवपद प्राप्तकर साक्षात् नंदीश्वर द्वीप के जिनमंदिरों में जाकर जिन प्रतिमाओं की पूजा करेंगे पुनः महान पुण्य संचित कर मनुष्य होकर परम्परा से मोक्ष को प्राप्त करके शाश्वत सुख के भोक्ता बन जायेंगे। इसीलिए सभी श्रावक, श्राविकाएं इस विधान को करके परोक्ष में भी नंदीश्वर द्वीप की वंदना का लाभ प्राप्त करें, यही मेरी मंगल भावना है।

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं अथवा शिलापट्ट लगवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

प्रेरणा—गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

तीर्थंकर जन्मभूमि	तीर्थंकरों के नाम
1. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	—श्री ऋषभदेव भगवान
	—श्री अजितनाथ भगवान
	—श्री अभिनंदननाथ भगवान
	—श्री सुमतिनाथ भगवान
	—श्री अनंतनाथ भगवान
2. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	—श्री संभवनाथ भगवान
3. कौशाम्बी (उ.प्र.)	—श्री पद्मप्रभु भगवान
4. वाराणसी (उ.प्र.)	—श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	—श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	—श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	—श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. भद्रिकापुरी, इटखोरी (चतरा-झारखंड)	—श्री शीतलनाथ भगवान
8. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	—श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	—श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	—श्री विमलनाथ भगवान
11. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	—श्री धर्मनाथ भगवान
12. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	—श्री शांतिनाथ भगवान
	—श्री कुन्थुनाथ भगवान
	—श्री अरनाथ भगवान

13. मिथिलापुरी	—श्री मल्लिनाथ भगवान
	—श्री नमिनाथ भगवान
14. राजगृही (नालंदा-बिहार)	—श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)	—श्री नेमिनाथ भगवान
16. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	—श्री महावीर भगवान

विशेष-ज्ञातव्य है कि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी द्वारा तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास का क्रम सफलतापूर्वक जारी है। इस क्रम में हस्तिनापुर, अयोध्या, कुण्डलपुर (नालंदा), राजगृही, सिंहपुरी (सारनाथ) में सुन्दर निर्माण एवं विकास के कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिससे कि प्राचीन तीर्थभूमियाँ प्रकाश में आई हैं तथा उनका राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार हुआ है। इसी क्रम में वर्तमान में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी का भी निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। आप भी अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास हेतु समाज में जागरुकता पैदा करें एवं संगठित होकर उन प्राचीन तीर्थभूमियों का जीर्णोद्धार करें। इस कार्य में हम सदैव आपके साथ हैं।

–निवेदक –

अखिल भारतवर्षीय
दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी

–अध्यक्ष –

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

–प्रधान कार्यालय –

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.-01233-280184, 280236

विधान की रचयित्री राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम—क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं—

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के माध्यम से लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है—कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लोक रचना एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य ''नंद्यावर्त महल'' तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, रोहतावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉन्ट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)

विषयानुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	नवदेवता पूजन	1
2.	मंगलाचरण	5
3.	नंदीश्वर द्वीप समुच्चय पूजा	7
4.	नंदीश्वर द्वीप पूर्व दिश जिनालय पूजा	12
5.	नंदीश्वर द्वीप दक्षिण दिश जिनालय पूजा	21
6.	नंदीश्वर द्वीप पश्चिम दिश जिनालय पूजा	29
7.	नंदीश्वर द्वीप उत्तर दिश जिनालय पूजा	37
8.	प्रशस्ति	44
9.	आरती	45
10.	नंदीश्वर व्रत विधि	46
11.	जम्बूद्वीप व्रत विधि	51
12.	जम्बूद्वीप पूजा	57

नवदेवता पूजन

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांती हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नवदेवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य –*ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देव-देव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनी पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्तिकांत बनेंगे।।5।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।
नवदेवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा – **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

नंदीश्वर विधान

मंगलाचरण

– चौबोल छंद –

त्रिदशपती के मुकुटतटों की, मणिगणप्रभ जलधारा से।
धौत पादपंकज जिनप्रतिमा, के अकृत्रिम जिनगृह हैं।।1।।
उन नैसर्गिक शुद्ध जिनालय, को सहसा साष्टांग यहीं।
त्रयशुद्धी से नमूँ निविड रज-कर्मविशुद्धि हेतु सही।।2।।
भवनवासि देवों के जिनगृह, सात करोड़ बहत्तर लाख।
उनमें तेजोमय जिनप्रतिमा, वंदन करूँ नमाकर माथ।।3।।
व्यंतर देवों में त्रिभुवनपति, प्रतिमा के गृह संख्यातीत।
त्रिभुवनजन मनवचन प्रीतिकर, सुरनुत उन्हें नमूँ नत शीश।।4।।
ज्योतिष सुर से पूज्य जिनालय, संख्यातीत नमूँ उनको।
बहु विकल्पयुत कल्पों में, अरु कल्परहित में वंदन हो।।5।।
लक्ष चुरासी सहस सत्तानवे, तेइस अधिक जिनालय हैं।
कल्पवासि कल्पातीतों के, उनको नितप्रति वंदूँ मैं।।6।।
लोकालोक विलोकित जिनवर, जयशाली के जिनगृह हैं।
मनुषक्षेत्र में चार शतक, अट्ठावन उनको प्रणमूँ मैं।।7।।
त्रिभुवन के सब चैत्यालय हैं, आठ करोड़ सु छप्पन लाख।
सहस सत्तानवे चार शतक, इक्यासी सबको नमूँ त्रिकाल।।8।।

इतने ही जिनभवन अकृत्रिम, त्रिभुवन में हैं नमूँ उन्हें।
त्रिभुवन के सुरगण से अर्चित, सत्प्रतिमायुत नमूँ उन्हें।।9।।
कुलगिरि इष्वाकार रुचक, कुंडल वक्षार रजत पर्वत।
मनुजोत्तरगिरि देवोत्तरकुरु, के जिनगृह छब्बिस त्रयशत।।10।।
नन्दीश्वरजलधी से वेष्टित, नन्दीश्वर वरद्वीप महान।
चन्द्रकिरणसम उज्ज्वलयश से, व्याप्त किया भूमंडल आन।।11।।
उनमें अंजन दधिमुख रतिकर, उत्तम पर्वत प्रतिदिश में।
तेरह तेरह उन पर सुरपति, अर्चित जिनमंदिर शोभें।।12।।
अषाढ़ कार्तिक फाल्गुन के शुभ, शुक्लपक्ष अष्टमि तिथि से।
अष्ट दिनों तक भक्ती से, सौधर्म प्रमुख सुरपति आते।।13।।
वहाँ दिव्य बहु गंधाक्षत चरु, दीप धूप पुष्पादिक से।
अनुपम जिन सर्वज्ञ बिंब की, महामहिम पूजा करते।।14।।
भेदों का क्या वर्णन जब, सौधर्म इन्द्र संस्नपन करें।
शेष इंद्र शशिसम निर्मल, यशयुत परिचारक भाव धरें।।15।।
इंद्र देवियाँ उज्ज्वल गुण मणियुत बहु मंगलपात्र लिये।
नृत्य करें अप्सरा शेष, सुरगण अवलोकन व्यग्र हुए।।16।।
वाचस्पति के वचन अगोचर, इंद्रादिककृत विभव सहित।
उस पूजाविधि के वर्णन में, मनुजमात्र हैं शक्ति रहित।।17।।
जिनपूजा निष्ठापित कर वे, चूर्ण लेप से दिखें विशेष।
सुरगण नन्दीश्वर जिनगृह की, प्रदक्षिणा कर पुनः अशेष।।18।।
पांचों मन्दरगिरि पर जाते, भद्रसाल नन्दन वन में।
सौमनसं पांडुक वन सबमें चार चार मंदिर शोभें।।19।।
उनकी प्रदक्षिणा वन्दन कर, पूजा कर निजचर्या से।
स्वास्पद मूल्य ग्रहण कर, सुरगण स्वस्वस्थान चले जाते।।20।।
मैं भी यहाँ पर उन जिनवर, आलय की नित अर्चना करूँ।
पूजन वंदन करूँ भक्ति से, नमस्कार भी नित्य करूँ।।21।।

अथ विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नंन्दीश्वर द्वीप समुच्चय पूजा

–अथ स्थापना (गीता छंद)–

सिद्धांत सिद्ध अनादि अनिधन, द्वीप नंदीश्वर कहा।
मुनि वंद्य सुरनर पूज्य अष्टम द्वीप अतिशययुत महा।।
वहाँ पर चतुर्दिक शाश्वते बावन जिनालय शोभते।
प्रत्येक में जिनबिंब इक सौ आठ सुर मन मोहते।।1।।

–दोहा–

जिन प्रतिमा के जिनभवन, परमशांति के धाम।
आह्वानन कर पूजते, मिले आत्मविश्राम।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक–

क्षीरोदधि का उज्ज्वल जल ले, कंचन झारी भर लाया हूँ।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में, त्रयधारा देने आया हूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन कर्पूर मिला, भर कनक कटोरी लाया हूँ।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में, चर्चन करके हर्षाया हूँ।।

कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम उज्ज्वल शालि पुंज, ले पुंज चढ़ाने आया हूँ।
निज का अक्षय पद शीघ्र मिले, बस ये ही इच्छा लाया हूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मचकुंद कमल बेला गुलाब, बहु सुरभित पुष्पों को लाया।
निजगुण सुगंधि फैले जग में, चरणों में रखकर हर्षाया।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली पेड़ा बरफी, पकवान बनाकर लाया हूँ।
सब उदर व्याधि के नाश हेतु, तव अर्पण कर सुख पाया हूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योती के जलते ही, सब अंधकार नश जाता है।
दीपक से तव पूजा करके, सज्ज्ञान उजेला आता है।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध धूप धूपायन में, खेवूं मैं कर्म जला डालूँ।
यश सौरभ से दशदिश महके, निजआत्म गुणों को मैं पालूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लीची अंगूर अनार आम, बहु सरस फलों को लाया हूँ।
तव चरणों में अर्पण करके, शिवफल के हित ललचाया हूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
तव चरणों में यह अर्घ, समर्पण करके अति हर्षाया हूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

अमल वापिका नीर, जिनपद धारा मैं करूँ।
शांति करो जिनराज, मेरे को सबको सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी फूल, हर्षित मन से लायके।
जिनवर चरण चढ़ाय, सर्वसौख्य संपति बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपस्थद्वापंचाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो नमः।**

जयमाला

– दोहा –

नंदीश्वरवरद्वीप में, अकृत्रिम जिन सद्म।
उनमें जिनप्रतिमा अमल, नमूँ नमूँ पदपद्म।।1।।

– शंभु छंद –

जय जय नंदीश्वर पर्व, जगत् में महापर्व कहलाता है।
जय जय बावन जिनमंदिर से, इंद्रों के मन को भाता है।।
जय जय जय रत्नमयी प्रतिमा, शाश्वत हैं आदि अंत विरहित।
जय जय प्रत्येक मंदिरों में, इक सौ अठ इकसौ आठ प्रमित।।2।।

चारों दिश में एकेक कहे, अंजनगिरि अतिशय ऊँचे हैं।
इनके चारों जिनमंदिर को, पूजत ही दुःख से छूटे हैं।।
अंजनगिरि के चारों दिश में, बावड़ियाँ एक एक सोहें।
इन सोलह बावड़ियों के मधि, दधिमुख पर्वत सुरमन मोहें।।3।।

इनके सोलह जिनमंदिर की, हम नित्य वंदना करते हैं।
जिनप्रतिमाओं की अर्चाकर, निज आत्म संपदा भरते हैं।।
सोलह बावड़ियों के बाहर, दो कोणों पर दो रतिकर हैं।
इन बत्तिस रतिकर पर्वत पर, शाश्वत जिनमंदिर रुचिकर हैं।।4।।

इन बत्तिस रतिकर मंदिर के, जिनबिंबों को मैं नित पूजूँ।
चउ सोलह बत्तिस के मिलकर, बावन जिनगृह सबको पूजूँ।।
अंजनगिरि नीलमणी सम हैं, दधिमुख नग दधिसम श्वेत कहे।
रतिकर नग स्वर्णिम वर्ण धरें, ये शाश्वत पर्वत शोभ रहे।।5।।

प्रत्येक वर्ष में तीन बार, आष्टान्हिक पर्व मनाते हैं।
सुरगण नंदीश्वर में जाकर, पूजा अतिशायि रचाते हैं।।
हम वहाँ नहीं जा सकते हैं, अतएव यहीं से नमते हैं।
अर्चन परोक्ष से ही करके, भव भव के पातक हरते हैं।।6।।

चारणऋद्धी धर ऋषिगण भी, इन प्रतिमाओं को ध्याते हैं।
जिनवर के गुणमणि नित गाते, फिर भी नहिं तृप्ती पाते हैं।।
यद्यपि इनका परोक्ष वंदन, पूजन है तो भी फल देता।
भावों से भक्ती की महिमा, परिणाम विशुद्धी कर देता।।7।।

मुनिराज भाव से शुक्लध्यान, ध्याते शिवपुरश्री पा जाते।
तब भला परोक्ष भक्ति करके, क्यों नहीं महान पुण्य पाते।।
जिनप्रतिमा चिंतामणि पारस, जिनप्रतिमा कल्पवृक्ष सम हैं।
ये केवल ''ज्ञानमती'' देने, में भी तो अतिशय सक्षम हैं।।8।।

–दोहा–

नंदीश्वरवर द्वीप की, महिमा अपरंपार।
जो श्रद्धा से नित जजें, पावें सौख्य अपार।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद–

जो भव्य आष्टान्हिक परब में, आठ दिन पूजा करें।
वरद्वीप नंदीश्वर जिनालय, बिम्ब के गुण उच्चरें।।
वे सर्वसुखसंपत्ति ऋद्धी, सिद्धि को भी पाएंगे।
सज्ज्ञानमति की गुणसुरभि को, विश्व में फैलाएंगे।।10।।

।।इत्याशीर्वादः।।

नंदीश्वरद्वीप पूर्वदिश जिनालय पूजा

–अथ स्थापना (गीताछंद)–

वर द्वीप नंदीश्वर सुअष्टम, तीन जग में मान्य हैं।
बावन जिनालय देवगण से, वंद्य अतिशयवान हैं।।
पूरब दिशा के जैनगृह, तेरह उन्हों की वंदना।
थापूं यहाँ जिनबिंब को, नितप्रति करूँ जिन अर्चना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं (चामर छंद)–

चाल –पार्श्वनाथ देव सेव.....

स्वर्णभृंग में सुशीत गंगनीर लाइये।
शाश्वते जिनेन्द्रबिंब पाद में चढ़ाइये।।
आठवें सुद्वीप में त्रयोदशा जिनालया।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध[1] पा लिया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरंग ताप ज्वर विनाश हेतु गंध है।
आप पाद पूजते मिले निजात्म गंध है।।
आठवें सुद्वीप में त्रयोदशा जिनालया।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध पा लिया।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सम्यग्ज्ञान।

मोतियों के हारवत् सफेद धौत शालि हैं।
आप को चढ़ावते निजात्म सौख्य मालि है।।
आठवें सुद्वीप में त्रयोदशा जिनालया।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध पा लिया।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मालती गुलाब कुंद मोगरा चुनाइये।
आप पाद पूजते सुकीर्ति को बढ़ाइये।।
आठवें सुद्वीप में त्रयोदशा जिनालया।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध पा लिया।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपूप खज्जकादि पूरियां चढ़ाइये।
भूख व्याधि जिष्णु[1] को अनंतशक्ति पाइये।।
आठवें सुद्वीप में त्रयोदशा जिनालया।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध पा लिया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नादि काल से लगे अनंत मोहध्वांत को।
दीप से जिनेश पूज नाशिये कुध्वांत को।।
आठवें सुद्वीप में त्रयोदशा जिनालया।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध पा लिया।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप लालचंदनादि मिश्र अग्नि में जले।
आतमा विशुद्ध होत कर्म भस्म हो चलें।।

1. जीतने वाले।

आठवें सुद्वीप में त्रयोदशा जिनालया।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध पा लिया।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्षु दंड सेव दाडिमादि थाल में भरें।
मोक्ष संपदा मिले जिनेश अर्चना करें।।
आठवें सुद्वीप में त्रयोदशा जिनालया।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध पा लिया।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ले अनर्घ्य मूर्तियों को पूजिये।
अष्ट कर्म नाश के त्रिलोकनाथ हूजिये।।
आठवें सुद्वीप में त्रयोदशा जिनालया।
पूजते जिनेंद्र बिंब सत्यबोध पा लिया।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

अमल वापिका नीर, जिनपद धारा मैं करूँ।
शांति करो जिनराज, मेरे को सबको सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी फूल, हर्षित मन से लायके।
जिनवर चरण चढ़ाय, सर्व सौख्य संपति बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– दोहा –

तेरह जिनगृह पूर्वदिश, पूजूं चित्त लगाय।
तेरह[1] विध चारित्र की, पूर्ति करो जिनराय।।1।।

इति श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्स्थाने मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– रोला छंद –

नंदीश्वर वरद्वीप, पूरबदिश मधि जानो।
अंजनगिरि गुण नाम, अतिशय रम्य बखानो।।
ईश निरंजन सिद्ध, प्रभु का निलय कहा है।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, मन संताप दहा है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्अंजनगिरिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि के चार, दिश में चउ द्रह[2] जानो।
नीर भरे कमलादि, कुमुदों से पहचानो।।
पूरब नंदा वापि दधिमुख नग[3] जिनगेहा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, मेटूं मन संदेहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशिनंदावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदवती द्रह माहिं, दधिमुख दधिसम सोहे।
तापे जिनवर धाम, सुर किन्नर मन मोहे।।
तिन में श्रीजिनबिंब, सुवरण रतनमयी हैं।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय पाऊँ, मोक्ष मही है।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशिनंदवतीवापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. पाँच महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्तिरूप चारित्र। 2. सरोवर। 3. पर्वत।

नंदोत्तरा सुवापि, मधि दधिमुख नग भारी।
पश्चिम दिश में जान, लख योजन द्रह भारी।।
तापे श्रीजिनधाम, शाश्वत सिद्ध सही है।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ मोक्ष मही है।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशिनंदोत्तरावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीघोषा वापि, उत्तरदिश में जानो।
तामधि दधि मुख अद्रि, उसपे जिनगृह मानो।।
त्रिभुवनपति जिनबिंब, अनुपम रत्नमयी हैं।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ मोक्ष मही है।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशिनंदिघोषावापिकामध्यस्थितदधिमुख-पर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– नरेन्द्र छंद –

चाल –परम परंज्योति.....

नंदा द्रह ईशान कोण में, रतिकर नग रक्ताभा।
ताके ऊपर शाश्वत अनुपम, जिनमंदिर रत्नाभा।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा हैं, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँ जग त्राता।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदावापीईशानकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंद्रा द्रह आग्नेय दिशा में रतिकर दुतिय कहा है।
तापे इंद्रवंश जिनमंदिर, अतिशय रम्य कहा है।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा हैं, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँ जग त्राता।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदवती द्रह अग्निकोण में, रतिकर तृतीय सुहाता।
तापे विश्ववंद्य जिनमंदिर, इंद्रादिक मन भाता।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा हैं, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँ जग त्राता।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदवतीवापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदवती वापी नैऋत्य में, रतिकर नग अतिसोहे।
अविचल श्री जिनआलय तापे, सुरवनिता मन मोहे।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा हैं, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँ जग त्राता।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदवतीवापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिमवापी नंदोत्तर है, नैऋतकोण सुहावे।
रतिकर नगपर रत्नखचित श्री, जिनमंदिर मन भावे।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा हैं, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँ जग त्राता।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदोत्तरावापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी नंदोत्तरा अपरदिश, ता वायव्यदिशा में।
रतिकर स्वर्ण अचल के ऊपर, जिनमंदिरअभिरामें।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा हैं, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूं तिहुं जग त्राता।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदोत्तरावापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीघोषा वापी विदिशा, वायु कोण में जानो।
रतिकर पर्वत पर अकृत्रिम, जिनमंदिर मन मानो।।

रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा हैं, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँ जग त्राता।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदिघोषावापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह नंदीघोषा ईशाने, रतिकर पीत सुहाता।
तापे रत्नखचित चैत्यालय, पूजत मन हरषाता।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा हैं, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँ जग त्राता।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदिघोषावापीईशानकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य –

अंजनगिरि दधिमुख अर रतिकर, सब मिल तेरह माने।
पूरबदिश में इन तेरह पर, जिनगृह सिद्ध बखाने।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा हैं, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँ जग त्राता।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपस्थद्वापंचाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो नमः।**

जयमाला

– दोहा –

चिन्मूरति परमात्मा, चिदानंद चिद्रूप।
गाऊँ गुणमाला अबे, स्वल्पज्ञान अनुरूप।।1।।

चाल – हे दीनबंधु.....

जय आठवाँ जो द्वीप नाम नंदिश्वरा है।
जय बावनों जिनालयों से पुण्यधरा है।
इक सौ तिरेसठे करोड़ लाख चुरासी।
विस्तार इतने योजनों से द्वीप विभासी।।2।।

पूरब दिशा के बीच में अंजनगिरी कहा।
जो इंद्रनील मणिमयी रत्नों से बन रहा।।
चौरासी सहस योजनों विस्तृत व तुंग है।
जो सब जगह समान गोल अधिक रम्य है।।3।।

इस गिरि के चार दिश में चार वापियाँ कहीं।
जो एक लाख योजनी चौकोन जलमयी।।
पूर्वादि क्रम दिशा से नंदा नंदवती हैं।
नंदोत्तरा औ नंदिघोषा नामवती हैं।।4।।

प्रत्येक वापियों में कमल फूल रहे हैं।
प्रत्येक के चउदिश में भी उद्यान घने हैं।।
अशोक सप्तपत्र चंप आम्र वन कहे।
पूर्वादि दिशा क्रम से अधिक रम्य दिख रहे।।5।।

दधिमुख अचल इन वापियों के बीच में बने।
योजन हजार दश उत्तुंग, विस्तृते इतने।।
प्रत्येक वापियों के दोनों बाह्यकोण में।
रतिकर गिरी हैं शोभते जो आठ हैं इनमें।।6।।

योजन हजार एक चौड़े तुंग भी इतने।
सब स्वर्ण वर्ण के कहे रतिकर गिरी जितने।।
दधिमुख दधि समान श्वेत वर्ण धरे हैं।
ये तेरहों ही अद्रि बहुत विभव भरे हैं।।7।।

इनमें जिनेन्द्र सद्म आदि अंत शून्य हैं।
जो सर्वरत्न से बने जिनबिंब पूर्ण हैं।।
उन मंदिरों में देव इंद्रवृंद जा सकें।
वे नित्य ही जिनेन्द्र की पूजादि कर सकें।।8।।

आकाशगामी साधु मनुज खग न जा सकें।
वे सर्वदा परोक्ष में ही भक्ति कर सकें।।
मैं भी यहाँ परोक्ष में ही अर्चना करूँ।
जिनमूर्तियों की बारबार वंदना करूँ।।9।।

प्रभु आपके प्रसाद से भवसिंधु को तरूँ।
मोहारिजीत शीघ्र ही जिनसंपदा वरूँ।।
हे नाथ! बार मेरी अब न देर कीजिए।
अज्ञानमती विज्ञ में अब फेर दीजिए।।10।।

–दोहा–

नंदीश्वर के पूर्व दिश, जिनमंदिर जिनदेव।
उनको पूजूं भाव से, ''ज्ञानमती'' हित एव।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद–

जो भव्य आष्टान्हिक परब में, आठ दिन पूजा करें।
वर द्वीप नंदीश्वर जिनालय, बिंब के गुण उच्चरें।।
वे सर्व सुख संपत्ति ऋद्धी, सिद्धि को भी पाएंगे।
सज्ज्ञानमति की गुण सुरभि को, विश्व में फैलाएंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

नंदीश्वरद्वीप दक्षिणदिश जिनालय पूजा

–अथ स्थापना (अडिल्ल छंद)–

नंदीश्वर वर द्वीप आठवों जानिये।
तामें दक्षिण दिश तेरह नग मानिये।।
तिन तेरह पे अकृत्रिम जिनसद्म हैं।
पूजूँ मन वच काय हरे वसु कर्म हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं–

चाल– पूजो-पूजों श्रीअरिहंत देवा.....

क्षीरसागर का प्रासुक नीर दुःख सागर का पाने तीर।
द्वीप नंदीश्वरे दक्षीण, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।जिनेन्द्र.....।
पूजूँ पूजूँ जिनेश्वर बिंब, सेवा करते सदा सुर वृंद।
शीघ्र छूटे करम का फंद, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध कर्पूर चंदन लाऊँ, राग वन्हि को शीघ्र बुझाऊँ।
द्वीप नंदीश्वरे दक्षीण, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।जिनेन्द्र.....।
पूजूँ पूजूँ जिनेश्वर बिंब, सेवा करते सदा सुर वृंद।
शीघ्र छूटे करम का फंद, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सोम रश्मि सदृश वर शाली, पुंज करते बनूँ गुणशाली।
द्वीप नंदीश्वरे दक्षीण, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।जिनेन्द्र.....।
पूजूँ पूजूँ जिनेश्वर बिंब, सेवा करते सदा सुर वृंद।
शीघ्र छूटे करम का फंद, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद मंदार चंपक लाऊँ, काम जेता प्रभु को चढ़ाऊँ।
द्वीप नंदीश्वरे दक्षीण, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।जिनेन्द्र.....।
पूजूँ पूजूँ जिनेश्वर बिंब, सेवा करते सदा सुर वृंद।
शीघ्र छूटे करम का फंद, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर श्रीखंड मोदक लाऊँ, भूख बाधा सदा की मिटाऊँ।
द्वीप नंदीश्वरे दक्षीण, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।जिनेन्द्र.....।
पूजूँ पूजूँ जिनेश्वर बिंब, सेवा करते सदा सुर वृंद।
शीघ्र छूटे करम का फंद, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेम दीपक में कर्पूर ज्वालूं, चित्त के मोहतम को नशालूँ।
द्वीप नंदीश्वरे दक्षीण, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।जिनेन्द्र.....।
पूजूँ पूजूँ जिनेश्वर बिंब, सेवा करते सदा सुर वृंद।
शीघ्र छूटे करम का फंद, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ अग्नि में दह के, गंध सौगंध्य दशदिश महके।।
द्वीप नंदीश्वरे दक्षीण, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।जिनेन्द्र.....।

पूजूँ पूजूँ जिनेश्वर बिंब, सेवा करते सदा सुर वृंद।
शीघ्र छूटे करम का फंद, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता बादाम काजू लाऊँ, मोक्षफल आश धरके चढ़ाऊँ।
द्वीप नंदीश्वरे दक्षीण, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।जिनेन्द्र.....।
पूजूँ पूजूँ जिनेश्वर बिंब, सेवा करते सदा सुर वृंद।
शीघ्र छूटे करम का फंद, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि अर्घ सजाऊँ, अष्टकर्मारिसैन्य भगाऊँ।।
द्वीप नंदीश्वरे दक्षीण, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।जिनेन्द्र.....।
पूजूँ पूजूँ जिनेश्वर बिंब, सेवा करते सदा सुर वृंद।
शीघ्र छूटे करम का फंद, जिनेन्द्रधाम तेरह को नित्य जजूँ मैं।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

अमल बावड़ी नीर, जिनपद धारा मैं करूँ।
शांति करो जिनराज, मेरे को सबको सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी फूल, हर्षित मन से लायके।
जिनवर चरण चढ़ाय, सर्वसौख्य संपति बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– सोरठा –

भव बाधा निरवार, अमृतगर्भित भक्ति से।
पूजूं जिनपद सार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।।1।।

इति श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्स्थाने मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– कुसुमलता छंद –

नंदीश्वर के दक्षिण दिश में, मधि ''अंजनगिरि'' तुंग महान।
इंद्रनीलमणि सम छवि ऊपर, नित्य निरंजन का गृह मान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त[1] परमस्थान।।1।।
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अंजनगिरिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि के पूरब ''अरजा'', वापी सजल कमल की खान।
ताके मधि ''दधिमुख'' पर्वत पर, जिनमंदिर अविचल सुख दान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।2।।
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिकामध्यदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन नग दक्षिण दिश वापी, ''विरजा'' कही अमल जल खान।
मध्य अचल ''दधिमुख'' के ऊपर, जिन चैत्यालय पावन जान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिकामध्यदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन नग पश्चिम दिश वापी, नाम ''अशोका'' शुच अपहार।
बीच अचल ''दधिमुख'' के ऊपर, शोक रहित जिनगृह सुखकार।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।4।।
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिकामध्यदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सज्जाति, सद्गार्हस्थ, पारिव्राज्य, सुरेन्द्रता, साम्राज्य, आर्हन्त्य, निर्वाण ये सात परमस्थान हैं।

उत्तर दिश में अंजनगिरि के, वापि ''वीतशोका'' अमलान।
''दधिमुख'' पर्वत शाश्वत उस पर, वीतशोक जिनमंदिर जान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापिकामध्यदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''अरजाद्रह'' ईशान कोण पर, ''रतिकर'' पर्वत सुंदर जान।
अकृत्रिम जिन चैत्यालय में, रतनमयी जिनबिंब महान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिकाईशानकोणे रतिकर-पर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''अरजा'' वापी अग्निकोण में, ''रतिकर'' दुतिय स्वर्णद्युतिमान।
अकृत्रिम जिनमंदिर सुंदर, जिनप्रतिमा सब सौख्य निधान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिकाआग्नेयकोणे रतिकर-पर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''विरजावापी'' आग्नेय पर, ''रतिकर'' नग अद्भुत मणिमान।
सिद्धकूट जिननिलय अकृत्रिम, मणिमय जिनआकृति शिवदान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिकाआग्नेयकोणे रतिकर-पर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''विरजावापी'' नैऋत दिश में, ''रतिकर'' पर्वत पीत सुहाय।
परमपुण्य जिनभवन अकृत्रिम, जिनवर छवि वरणी नहिं जाय।।

1. जिनबिंब।

जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम ''अशोकाद्रह'' नैऋत में, ''रतिकर'' पर्वत अतुल निधीश।
रत्नमयी जिनमहल अनूपम, जिनवरप्रतिमा त्रिभुवन ईश।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि ''अशोका'' वायवदिश में, ''रतिकर'' नग शोभे स्वर्णाभ।
परमपूत जिनवेश्म अमल है, श्री जिनबिंब अतुल रत्नाभ।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी सजल ''वीतशोका'' के, वायुकोण ''रतिकर'' रतिनाथ।
रतिपति विजयी जिनमंदिर में, रुचिकर जिनछवि त्रिभुवननाथ।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतशोकद्रह में ईशान पर, रतिकर पीतवर्ण मणिकांत।
अकृत्रिम जिनआलय दुखहर, जिनवरबिंब सौम्यछवि शांत।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य –

अंजनगिरि इक दधिमुख नग चउ,रतिकर पर्वत आठ कहाय।
इन तेरह पर तेरह मंदिर, मन वच तन से पूजूँ आय।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुण गान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परमस्थान।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि संबंधित्रयोदशजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपस्थद्वापंचाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा – **पुण्यतीर्थ कल्याणतरु, शाश्वत श्री जिनधाम।**
तेरह विध चर्या[1] क्रिया, हेतु जजूँ वसु याम।।1।।

स्रग्विणी छंद – **जै महाद्वीप अष्टम सुनंदीश्वरं।**
जैदिशा याम्य[2] तेरह सु जिनमंदिरं।।
मृत्युहर सिद्ध प्रतिमा नमोस्तु तुम्हें।
जो तुम्हें, पूजतें सिद्धि परणें उन्हें।।1।।

इंद्र शत भक्त परिवार सह आवते।
जैन प्रतिमा जजें शीश को नावते।।
साधुगण नित्य मन में तुम्हें ध्यावते।
अष्टमी भूमि[3] को शीघ्र ही पावते।।2।।

चिच्चमत्कार चैतन्य ज्योती धरें।
शुद्ध परमात्म आनंद अमृत भरें।।
सिद्ध शाश्वत परम सौख्य पीयूष हैं।
जैन के बिंब सर्वात्म चिद्रूप हैं।।3।।

1. 5 महाव्रत 5 समिति 3 गुप्ति ये 13 चर्या-चारित्र हैं और 5 परमेष्ठी नमस्कार, 6 आवश्यक, असही, निसही ये 13 क्रिया-करण हैं। 2. दक्षिण। 3. सिद्धभूमि।

रत्न सिंहासनों पे विराजे वहाँ।
मोतियों से जड़े छत्र फिरते वहाँ।।
कांति भामंडलों की अधिक भासती।
कोटि सूरजप्रभा देख के लाजती।।4।।
वीतरागी महाशांति मुद्रा प्रभो।
पूजकों का अशुभ राग हरती विभो।।
पद्म आसन धरें पापहारी प्रभो।
नासिका अग्र पे दृष्टि धारी विभो।।5।।
स्वर्ण रत्नोंमयी मूर्तियाँ शाश्वती।
भव्य के दुःख संताप संहारती।।
आज मैं भी यहाँ अर्चना कर रहा।
शुद्ध सम्यक्त्व का आज निर्झर बहा।।6।।
नाथ मांगूं अबे आश को पूरिये।
ज्ञानमति पूर्णकर काल को चूरिये।।
सिद्धि साम्राज्य को दे सुखी कीजिए।
आपके पास में ही बुला लीजिए।।7।।

दोहा – **तुम गुण धागा में किये, विविधवर्णमय फूल।**
स्तुतिमाला कंठ में, धरे लहें भव कूल।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

– गीता छंद –

जो भव्य आष्टान्हिक परब में, आठ दिन पूजा करें।
वर द्वीप नंदीश्वर जिनालय, बिंब के गुण उच्चरें।।
वे सर्व सुख संपत्ति ऋद्धी, सिद्धि को भी पाएंगे।
सज्ज्ञानमति की गुण सुरभि को, विश्व में फैलाएंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

नंदीश्वर द्वीप पश्चिमदिश जिनालय पूजा

अथ स्थापना

–कुसुमलता छंद–

नंदीश्वर में पश्चिम दिश में, तेरह जिन चैत्यालय जान।
अंजनगिरि दधिमुख रतिकर पे, ऋद्धि सिद्धि कर सौख्यनिधान।।
सिद्धरूप चिद्रूप चैत्य जिन, परमानंद सुधारस दान।
आह्वानन स्थापन संनिध, करके पूजूँ जिन गुण खान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्-त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्-त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्-त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं (सखी छंद)–

रेवानदि को जल भरिये, त्रय धार करत मल हरिये।
नंदीश्वर अपर[1] दिशी में, तेरह जिनगेह जजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सित चंदन केशर घसिये, अर्चत भवताप प्रणशिये।
नंदीश्वर अपर दिशी में, तेरह जिनगेह जजूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम तंदुल लावो, जिन आगे पुंज चढ़ाओ।
नंदीश्वर अपर दिशी में, तेरह जिनगेह जजूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

1. पश्चिम।

सुरतरु के सुमन मंगावो, [1]मदनारिप्रभू को चढ़ावो।
नंदीश्वर अपर दिशी में, तेरह जिनगेह जजूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध पकवान बनाओ, भव भव की भूख मिटाओ।
नंदीश्वर अपर दिशी में, तेरह जिनगेह जजूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर जला कर धरिये, आरति कर अघ तम हरिये।
नंदीश्वर अपर दिशी में, तेरह जिनगेह जजूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप अगनि संग जारो, सब कर्म अरी को टारो।
नंदीश्वर अपर दिशी में, तेरह जिनगेह जजूँ मैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस मधुर भर थाली, नहिं जांय मनोरथ खाली।
नंदीश्वर अपर दिशी में, तेरह जिनगेह जजूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु अर्घ्य बनाओ, जिन आगे नित्य चढ़ावो।
नंदीश्वर अपर दिशी में, तेरह जिनगेह जजूँ मैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

अमल बावड़ी नीर, जिनपद धारा मैं करूँ।
शांति करो जिनराज, मेरे को सबको सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

1. काम विजेता।

कमल केतकी फूल, हर्षित मन से लाय के।
जिनवर चरण चढ़ाय, सर्वसौख्य संपति बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– दोहा –

सर्वसिद्धिप्रद जानिये, रत्नमयी जिनधाम।
स्वयंसिद्ध जिनबिंब को, नित प्रति करूँ प्रणाम।।1।।

इति श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थाने मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– अडिल्ल छंद –

द्वीप आठवें पश्चिम दिश, अंजनगिरी।
तापे जिनगृह अतुल सौख्य संपति भरी।।
स्वयं सिद्ध[1] जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अंजनगिरिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''विजयावापी'' मध्य दधीमुख जानिये।
दधिसम ऊपर शाश्वत जिनगृह मानिये।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीमध्यदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन दक्षिण ''वैजयंति'' वापी कही।
बीच अचल दधिमुख पे जिनगृह सुखमही।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंतीवापिकामध्यदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अनादि अनंत।

अंजन पश्चिम वापि ''जयंती'' सोहती।
मधि दधिमुख पे जिनगृह से मन मोहती।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयंतीवापिकामध्यदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि उत्तर, वापी ''अपराजिता''।
मधि दधिमुख पर्वत पे जिनगृह शासता।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितावापिकामध्यदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''विजयावापी'' रुद्रकोण[1] पे रतिकरा।
तापे अकृत्रिम जिनगृह भवि मनहरा।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीईशानकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''विजयाद्रह'' आग्नेय कोण रतिकर गिरी।
परमश्रेष्ठ जिनमंदिर से अनुपम सिरी।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''वैजयंतिवापी'' के अग्नी[2] कोण में।
रतिकर गिरि पर श्रीजिनवर के वेश्म में।।

1. ईशान कोण। 2. आग्नेय।

स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंतीवापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''वैजयंतिद्रह'' के नैऋत में जानिये।
रतिकर नग में अकृत्रिम गृह मानिये।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंतीवापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी ''जयंती'' नैऋत में रतिकर कहा।
परमपूत जिनमंदिर निजसुख कर कहा।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयंतीवापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि ''जयंती'' वायवदिश रतिकर महा।
सर्वश्रेष्ठ अकृत्रिम जिनगृह दुःख दहा।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयंतीवापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''अपराजिता'' सुवापी वायव कोण में।
रतिकर पर्वत पे जिनगृह अतिरम्य में।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिअपराजितावापीवायव्यकोणेरतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह ''अपराजित'' की विदिशा ईशान है।
तापे रतिकर तप्तकनक मणिमान है।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितावापीईशानकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य –

नंदीश्वर पश्चिम दिश अंजनगिरि कहा।
दधिमुख रतिकर मिल तेरह पर्वत महा।।
स्वयं सिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर से तिरूँ भक्ति की नाव से।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपस्थद्वापंचाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो नमः।**

जयमाला

– दोहा –

नंदीश्वर वर द्वीप है, महातीर्थ सुखकार।
भवि आतम निर्मल करे, कर्मकीच अपसार[1]।।1।।

– शंभु छंद –

जय जय नंदीश्वर महाद्वीप, सौ इन्द्र वंदना करते हैं।
प्रत्येक वर्ष में तीन बार, अष्टान्हिक पर्व उचरते हैं।।
आषाढ़ सुकार्तिक फाल्गुन में, अष्टमि से पूर्णा तक शुक्ला।
चारों निकाय के देव मिलें, पूजन कर करते भव सुफला।।1।।

---

1. दूर करके।

सौधर्म इन्द्र ऐरावत इभ[1], चढ़कर श्रीफल कर लाते हैं।
ईशान इंद्र हाथी पर चढ़, गुच्छे सुपारि के लाते हैं।।
सानत्कुमार सुरपति मृगपति, पर चढ़ आम्रों के गुच्छे ले।
माहेन्द्र श्रेष्ठ घोड़े पर चढ़, केलों को अच्छे अच्छे ले।।2।।

ब्रह्मेन्द्र हंस पर चढ़ करके, केतकी पुष्प कर में लाते।
ब्रह्मोत्तर इंद्र क्रौंच[2] खग पर, चढ़ कमल हाथ में ले आते।।
शुकेन्द्र चकोर पक्षि पर चढ़, सेवंती कुसुम लिये आते।
तोता चढ़ महाशुक्र सुरपति, फूलों की माला को लाते।।3।।

कोयल पर चढ़ सुरपति शतार, कर नील कमल ले आते हैं।
अर सहस्रार सुर नाथ गरुड़, पर चढ़ अनार फल लाते हैं।।
आनत सुरपति विहगाधिप पर, चढ़ पनस फलों को लाते हैं।
प्राणत सुरपति तुबरू फल ले, चढ़ पद्म विमान सुआते हैं।।4।।

पक्के गन्ने ले आरणेन्द्र, चढ़ कुमुद विमान वहाँ जाते।
कर धवल चंवर ले अच्युतेन्द्र, चढ़ मोर विमान वहाँ आते।।
ये चौदह[3] इंद्र कल्पवासी, अगणित वैभव संग लाते हैं।
निज निज परिवार सहित चलते, निज-निज वाहन चढ़ आते हैं।।5।।

सुर आभियोग्य जाती के वे, इंद्रों के वाहन बनते हैं।
ऐरावत आदिक रूप बना, सुंदर वाहन से सजते हैं।।
ये इंद्र अतुल जिनभक्तीवश कर में नरियल आदिक लाते।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में, सुरतरु फल फूल चढ़ा जाते।।6।।

चारों निकाय के देव मिले, आठों दिन पूजा करते हैं।
रात्रि दिन भेद रहित वहाँ पे, सु अखंडित अर्चा करते हैं।।
नर वहाँ नहीं जा सकते हैं, इसलिए यहीं पर पूजे हैं।
वंदन पूजन सब ही परोक्ष, करके भी भव से छूटे हैं।।7।।

1. हाथी। 2. गरुड़ पक्षी। 3. तिलोयपण्णत्ति पृ. 540 से 542 तक में यह प्रकरण है।

–दोहा–

मैं भी श्रद्धा भक्ति से, पूजूँ शक्ति न लेश।
केवल ''ज्ञानमती'' मिले, जहाँ न भव संक्लेश।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो भव्य आष्टान्हिक परब में आठ दिन पूजा करें।
वर द्वीप नंदीश्वर जिनालय बिंब के गुण उच्चरें।।
वे सर्व सुख संपत्ति ऋद्धी सिद्धि को भी पाएंगे।
सज्ज्ञानमति की गुण सुरभि को विश्व में फैलायेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

नंदीश्वरद्वीप उत्तरदिश जिनालय पूजा

अथ स्थापना

–गीता छंद–

वरद्वीप नंदीश्वर सु उत्तर दिश त्रयोदश अचल हैं।
अंजन दधीमुख रतिकरों पे, श्रीजिनेश्वर महल हैं।।
प्रत्येक में जिनबिंब इकसौ आठ तिनकी थापना।
बहुभक्ति से कर पूजहूँ, होवे तुरत हित आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्-त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्-त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्-त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं (रोला छंद)–

क्षीरोदधि को नीर, कनक कलश में भरिये।
पूजत हो भव तीर, समतारस घट भरिये।।
अष्टम द्वीप उदीच[1], दिश तेरह जिनधामा।
जजत मिले गुण थान, तेरह[2] पुन शिवरामा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन सार, तन का ताप हरे हैं।
जिन पूजत गुणकार, भव भव दाह हरे हैं।।
अष्टम द्वीप उदीच, दिश तेरह जिनधामा।
जजत मिले गुण थान, तेरह पुन शिवरामा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

1. उत्तर। 2. सयोगकेवली नाम का तेरहवाँ गुणस्थान।

अक्षत अमल अखंड, पुंज धरूँ तुम आगे।
आतम सौख्य अखंड, मिले दुरित अरि भागे।।
अष्टम द्वीप उदीच, दिश तेरह जिनधामा।
जजत मिले गुण थान, तेरह पुन शिवरामा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फुल्ल प्रफुल्लित माल, जिनपद कमल चढ़ाऊँ।
काल मल्ल शर[1] शल्य[2], दूर करूँ सुख पाऊँ।।
अष्टम द्वीप उदीच, दिश तेरह जिनधामा।
जजत मिले गुण थान, तेरह पुन शिवरामा।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खुरमा गुझिया आदि, बहु पकवान चढ़ाऊँ।
निज आतम रस पाय, भव भव रोग नशाऊँ।।
अष्टम द्वीप उदीच, दिश तेरह जिनधामा।
जजत मिले गुण थान, तेरह पुन शिवरामा।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन दीप जलाय, करूँ आरती तेरी।
मोह तिमिर मिट जाय, मिटे जगत की फेरी।।
अष्टम द्वीप उदीच, दिश तेरह जिनधामा।
जजत मिले गुण थान, तेरह पुन शिवरामा।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु वर धूप, खेऊँ अग्नि घटों में।
कर्म कालिमा दूर, होती बस मिनटों में।।
अष्टम द्वीप उदीच, दिश तेरह जिनधामा।
जजत मिले गुण थान, तेरह पुन शिवरामा।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

1. वाण। 2. पीड़ा।

पिस्ता दाख बदाम, फल अंगूर चढ़ाऊँ।
सुफल महाफल पाय, विषयन नाहिं लुभाऊँ।।
अष्टम द्वीप उदीच, दिश तेरह जिनधामा।
जजत मिले गुण थान, तेरह पुन शिवरामा।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविध अर्घ्य मिलाय, गाय बजाय चढ़ाऊँ।
फल अनर्घ्य पद हेतु, तुम पद भक्ति बढ़ाऊँ।।
अष्टम द्वीप उदीच, दिश तेरह जिनधामा।
जजत मिले गुण थान, तेरह पुन शिवरामा।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

अमल बावड़ी नीर, जिनपद धारा मैं करूँ।
शांति करो जिनराज, मेरे को सबको सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी फूल, हर्षित मन से लायके।
जिनवर चरण चढ़ाय, सर्वसौख्यसंपति बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– सोरठा –

ज्ञानभानु परमेश, तुम अनंतगुण के धनी।
मैं भी नाथ हमेश, अल्पबुद्धि फिर भी जजूँ।।1।।

इति श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थाने मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– दोहा –

उत्तरदिश इस द्वीप में, अंजन गिरि नीलाभ।
पुण्य धाम जिनसद्म को, पूज मिले शिवलाभ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजननग पूरबदिशी, ''रम्या'' वापी स्वच्छ।
मधि दधिमुख गिरि जिनभवन, पूजत कर्म विपक्ष[1]।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापीमध्यदधिमुखपर्वतजिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन के दक्षिण दिशी, ''रमणीया'' द्रह जान।
दधिमुख नगपर जिननिलय, पूजत हो निजथान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापीमध्यदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन के पश्चिम दिशी, द्रह ''सुप्रभा'' अनूप।
दधिमुख ऊपर जिनभवन, पूजत हो शिव भूप।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापीमध्यदधिमुखपर्वतजिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजननग उत्तर दिशी, ''सर्वतोभद्रा'' वापि।
मधि दधिमुख पे जिनसदन, जजत न जन्म कदापि।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीमध्यदधिमुखपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''रम्याद्रह'' ईशान में, रतिकर नग स्वर्णाभ।
अनुपमनिधि जिनगेह को, पूजत हो निष्पाप।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापीईशानकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्याद्रह आग्नेय दिशि, रतिकर गिरि अमलान।
जिनमंदिर शाश्वत जजूँ मिले नवोंनिधि आन।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया द्रह अग्नि दिशि, रतिकर नग सिरताज।
उस पर अविचल जैनगृह, जजत मोक्ष साम्राज।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. दूर होते हैं।

रमणीया द्रह नैऋते, रतिकर नग सुखदान।
शाश्वत जिनमंदिर जजूँ, मिले स्वपर विज्ञान।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि सुप्रभा नैऋते, रतिकर पर्वत सिद्ध।
मणिमय जिनमंदिर जजूँ, पाऊँ ऋद्धि समृद्ध।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह सुप्रभा सुवायु दिशि, रतिकर नग रतिकार।
तापे जिनगृह नित जजूँ, मिले स्वपद अविकार।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वत-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्रिका, रतिकर वायव कोण।
जिनमंदिर शाश्वत जजूँ, मिले भवोदधि कोण।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीवायव्यकोणे रतिकर-पर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्रिका, रतिकर दिशि ईशान।
तापे जिनगृह पूजते, हो अनंत श्रीमान्।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीईशानकोणे रतिकर-पर्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य (गीता छंद) –

अष्टम नंदीश्वर द्वीप में, उत्तरदिशी में अचल हैं।
अंजन दधीमुख रतिकरों पे, सासते जिनमहल हैं।।
पूर्णार्घ्य ले उनमें विराजित, जैनबिंबों को जजूँ।
गुणथान तेरह पूर्णकर, आर्हंत्य लक्ष्मी को भजूँ।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपस्थद्वापंचाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो नमः।**

जयमाला

– त्रिभंगी छंद –

चाल – क्षीरोदधि गंगा.....

जयजय नंदीश्वर, द्वीप महीश्वर, बावन भूधर नित्य जजूँ।
जय जय उत्तरदिश, तेरह जिनगृह, शाश्वत जिनकृति नित्य भजूँ।।
जय मणिसिंहासन, धर पद्मासन, तुम जिनशासन हितकारी।
जय तुम गुणमाला, भक्तिरसाला, नितप्रति गाऊँ सुखकारी।।1।।

– रोला छंद –

जय जय अष्टम द्वीप, उत्तर दिश में जानों।
इकसौ त्रेसठ कोटि, लाख चुरासी मानो।।
इतने योजन मान, विस्तृत चार दिशि है।
तेरह तेरह अद्रि, मानें चार दिशि है।।1।।

गोलाकार महान, वेदी उपवन सोहें।
सुरनर किन्नर आन, जिनगुण से मन मोहें।।
ज्योतिष व्यंतर देव, भावन सुरगण आवें।
विविध कुसुम की माल, नाना फल भी लावें।।2।।

कल्पवासि[1] सुर आय, पूरब दिश जिन पूजें।
भावनसुर दक्षीण, दिश में जिनवर पूजें।।
पश्चिम में सुरवृंद, व्यंतर यजन करे हैं।
उत्तर में सुरवृंद, ज्योतिष भक्ति भरे हैं।।3।।

पौर्वाण्हिक दो प्रहर, दो प्रहरी अपराण्हे।
पूर्वरात्रि दो प्रहर, अपररात्रि दो जान्हे।।
क्रम से चउ विध देव, पूजन नित्य करें हैं।
पुनः प्रदक्षिण रूप, दिश परिवर्त करें हैं।।4।।

इस विध मास असाढ़, कार्तिक फाल्गुन जानो।
शुक्ल अष्टमी लेय, पूनम तक विधि जानो।।

असंख्यात सुरवृंद, अतिशय भक्ति करे है।
आठ दिनों हि अखंड, पूजत पुण्य भरे हैं।।5।।
सुवरण कलश सुगंध, नीर प्रपूर्ण भरे हैं।
जिनप्रतिमा अभिषेक, करते पाप हरे हैं।।
कुंकुम चंदन गंध, मिल कर्पूर सुगंधी।
कालागरु अर अन्य बहु विध वस्तु सुगंधी।।6।।
गंध बनाकर इंद्र, मूर्ति विलेप करे हैं।
चंदन से जिन चर्च कर्मकलंक हरे हैं।।
तंदुल सुम पकवान, दीप सुधूप फलों से।
जिनबिंबों को पूज, छुटते कर्म मलों से।।7।।
चंदवा चंवर विचित्र, इनसे सदन सजावें।
ढोरत चंवर सफेद, भेरी आदि बजावें।।
सुर अप्सरियाँ नृत्य, करतीं जिनगुण गावें।
जिनवर चरित विशेष, नाटक कर हषावें।।8।।
इस विध बहुत प्रकार, भक्ति प्रगाढ़ करे हैं।
समकितनिधि को पाय, सिंधु अथाह तरे हैं।।
मैं भी प्रभु तुम पास, आय यही अब मांगूँ।
रत्नत्रय निधि पाय, विषय कषाय कु त्यागूँ।।9।।
और नहीं कुछ आश, नाथ रही अब मेरी।
ऐसा करो उपाय, मिटे तिहुँजग फेरी।।
तम अज्ञान हटाय ''ज्ञानमती'' कर पूरी।
नाथ सुनो अब शीघ्र ना हो मांग अपूरी।।10।।

– दोहा –

नंदीश्वर वरद्वीप में, बावन जिनवर धाम।
पुनः पुनः शिर नायके, उनको नित्य प्रणाम।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

– गीताछंद –

जो भव्य आष्टान्हिक परब में, आठ दिन पूजा करें।
वर द्वीप नंदीश्वर जिनालय, बिंब के गुण उच्चरें।।
वे सर्व सुख संपत्ति ऋद्धी, सिद्धि को भी पायेंगे।
सज्ज्ञानमति की गुण सुरभि को, विश्व में फैलायेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

– दोहा –

वीर अब्द पच्चीस सौ, उन्निस सौख्य निधान।
माघ शुक्ल दशमी तिथी, पूरण किया विधान।।1।।
हस्तिनागपुर क्षेत्र पर, जंबूद्वीप विख्यात।
बावन जिनगृह को नमूँ, द्वीप नंदीश्वर ख्यात।।2।।
चारित्र चक्रवर्ती गुरू, शांतिसागराचार्य।
उनके पट्टाधीश श्री, वीरसागराचार्य ।।3।।
किया आर्यिका ज्ञानमति, मेरे गुरुवर मान्य।
गणिनी मैंने भक्तिवश, रचा विधान महान।।4।।
जब तक जग में सौख्यप्रद, जिनशासन गुणखान।
तब तक भविजन हित करे, नंदीश्वर सुविधान।।5।।

इति मंगलं भूयात्

आरती

रचयित्री - आर्यिका चंदनामती

आरति करो रे,
श्री नंदीश्वर के जिनभवनों की आरति करो रे।।टेक.।।

बावन जिनमंदिर से शोभित अष्टम द्वीप नंदीश्वर हैं।
सब मंदिर में अलग अलग इक सौ अठ कहे जिनेश्वर हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री स्वयंसिद्ध जिनप्रतिमाओं की आरति करो रे।।1।।

रतिकर अंजनगिरि दधिमुख, पर्वत शाश्वत वहाँ राज रहे।
बावड़ियों में रतिकर नग पर, जिनवर बिम्ब विराज रहे।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री अकृत्रिम जिनवर बिम्बों की, आरति करो रे।।2।।

आष्टान्हिक पर्वों में सब, इन्द्रादि देवगण जाते हैं।
आठ दिनों तक वहाँ निरन्तर, पूजा भक्ति रचाते हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
नंदीश्वर के बावन भवनों की, आरति करो रे।।3।।

मानव विद्याधर कोई, इस द्वीप में नहिं जा सकते हैं।
तभी ''चन्दनामती'' यहाँ वे, आरति भक्ती करते हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री शांतिछवी युत जिनबिम्बों, की आरति करो रे।4।।

नंदीश्वर व्रत विधि

नंदीश्वर द्वीप की एक-एक दिशा में चार-चार दधिमुख हैं। इसलिए प्रत्येक दधिमुख को लक्ष्य कर चार उपवास करना चाहिए। इन उपवासों में एक उपवास, एक पारणा पुनः एक उपवास, एक पारणा ऐसी विधि है। एक-एक दिशा में आठ रतिकर हैं इसलिए प्रत्येक रतिकर को लक्ष्य कर आठ उपवास करना चाहिए। एक-एक दिशा में एक-एक अंजनगिरि है इसलिए एक अंजनगिरि को लक्ष्य कर एक बेला करना चाहिए। इस प्रकार एक दिशा के बारह उपवास, एक बेला और तेरह पारणाएं होती हैं। यह व्रत पूर्वदिशा से प्रारंभ कर दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा के क्रम से चारों दिशाओं का करना चाहिए। इसमें अड़तालीस उपवास, चार बेला और बावन पारणाएं हैं। इस तरह यह व्रत एक सौ आठ दिन में पूर्ण होता है। यह नंदीश्वर व्रत अत्यंत श्रेष्ठ है और जिनेन्द्र तथा चक्रवर्ती के पद को प्राप्त कराने वाला है[1]।

यह उत्तम व्रत विधि है। जघन्यरूप से अड़तालीस उपवास और चार बेला उपर्युक्त क्रम से न करके अपनी शक्ति के अनुसार कभी भी कर सकते हैं जैसे कि महिने में एक, दो उपवास आदि करके जब बारह उपवास पूर्ण हो जाये तब बेला करके एक दिशा के व्रत को पूर्ण करें। अथवा कोई-कोई मात्र बावन उपवास करके भी व्रत कर लेते हैं। कदाचित् उपवास की शक्ति न होने से एक बार शुद्ध भोजन करके-एकाशन करके या अल्पाहार करके भी व्रत कर सकते हैं।

इन व्रतों की जाप्य निम्न प्रकार हैं–

समुच्चय मंत्र–

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधि-द्वापंचाशत्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

नंदीश्वरद्वीप में पूर्व दिशा के 13 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदवतीवापीमध्यस्थित-

दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

3. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदोत्तरावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

4. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदिघोषावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदावापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदवतीवापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

8. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदवतीवापीनैऋत्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदोत्तरावापीनैऋत्यकोण-स्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदोत्तरावापीवायव्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदिघोषावापीवायव्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदिघोषावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

13. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-अंजनगिरिस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

नंदीश्वरद्वीप में दक्षिणदिशा के 13 मंत्र—

1. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अरजावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-विरजावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

3. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अशोकावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

4. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-वीतशोकावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अरजावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अरजावापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-विरजावापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

8. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-विरजावापीनैऋत्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अशोकावापीनैऋत्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अशोकावापीवायव्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-वीतशोकावापीवायव्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-वीतशोकावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

13. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अंजनगिरिस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

नंदीश्वरद्वीप में पश्चिम दिशा के 13 मंत्र—

1. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-विजयावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-वैजयंतीवापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

3. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-जयंतीवापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

4. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-अपराजितावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-विजयावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-विजयावापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-वैजयंतीवापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

8. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-वैजयंतीवापीनैऋत्यकोण-स्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-जयंतीवापीनैऋत्यकोण-स्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-जयंतीवापीवायव्य-कोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-अपराजितावापी-वायव्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-अपराजितावापी-ईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

13. ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-अंजनगिरिस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

नंदीश्वरद्वीप में उत्तर दिशा के 13 मंत्र—

1. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रम्यावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रमणीयावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

3. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सुप्रभावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

4. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सर्वतोभद्रावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रम्यावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रम्यावापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रमणीयावापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

8. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रमणीयावापीनैऋत्य-कोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सुप्रभावापीनैऋत्य-कोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सुप्रभावापीवायव्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सर्वतोभद्रावापीवायव्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सर्वतोभद्रावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

13. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-अंजनगिरिस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

विशेष—हरिवंशपुराण में 4 दधिमुख और 8 रतिकर के ऐसे 12 उपवास के बाद अंजनगिरि का बेला करने को कहा है अतः यहाँ पर तेरहवें नंबर पर अंजनगिरि का मंत्र रखा है। यह मंत्र बेला में दोनों दिन जपना चाहिए। व्रत पूर्ण हो जाने पर नंदीश्वर द्वीप की रचना बनवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करावें। अथवा इतनी शक्ति न होने पर अपनी शक्ति के अनुसार जैन ग्रंथों को छपवाकर वितरित करें। मंदिर में 52 उपकरण आदि दान करें। नंदीश्वर विधान कराकर व्रत का उद्यापन करके अपने जीवन को सफल करें।

जम्बूद्वीप व्रत विधि

जम्बूद्वीप के सुदर्शमेरु के 16 जिनमंदिर, गजदंत के 4, जंबू शाल्मली वृक्ष के 2, सोलहवक्षार पर्वत के 16, चौंतीस विजयार्ध पर्वत के 34 और छह कुलाचल के 6 ऐसे 16+4+2+16+34+6=78 अठत्तर अकृत्रिम जिनमंदिर हैं। इनको लक्ष्य करके 78 उपवास करना उत्तम है, अल्पाहार करना मध्यम है और एक बार शुद्ध भोजन-एकाशन करना जघन्य व्रत है।

इस व्रत को तिथि से करने पर सुदर्शमेरु के 16 प्रतिपदा के 16, दो वृक्ष के द्वितीया के 2, चार गजदंत के चतुर्थी के 4, षट् कुलाचल के षष्ठी के 6, सोलह वक्षार के 16 अष्टमी के 16, चौंतीस विजयार्ध के 34 चौदश के 34 इस प्रकार इन तिथियों में व्रत कर सकते हैं। यदि बिना तिथि के करना है तो अष्टमी, चतुर्दशी आदि तिथियों में व्रतों को करके 78 व्रत पूरे करने चाहिए। पुनः जंबूद्वीप विधान करके उद्यापन करे, शक्ति के अनुसार जिनप्रतिमा निर्माण कराकर जिनमंदिर बनवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, शास्त्रदान, 78-78 उपकरण दान आदि करके व्रत का उद्यापन पूर्ण करना चाहिए। व्रत के दिन जंबूद्वीप की पूजा करना चाहिए। यह पूजा इसी पुस्तक के अंत में छपी है।

प्रत्येक व्रत में समुच्चय जाप्य निम्न प्रकार है–

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिअष्टसप्ततिजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

जम्बूद्वीप जिनमंदिर के 78 व्रत के 78 पृथक् पृथक् मंत्र–

सुदर्शन मेरु के 16 जिनमंदिर के 16 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

चार गजदंतपर्वत जिनमंदिर के 4 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवद्गजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महासौमनसगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नम
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

दो वृक्षों के जिनमंदिर के 2 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-जंबूवृक्षस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शाल्मलिवृक्षस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

षट् कुलाचल जिनमंदिर के 6 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्थित-जिनालयाजिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्थित-जिनालयाजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रूक्मिपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरिपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

सोलह वक्षार पर्वत जिनमंदिर के 16 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

15. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

34 विजयार्ध के 34 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्योनमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
7. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
8. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्योनमः।
10. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
11. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
12. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्योनमः।
14. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुरम्यकाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
15. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
16. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
17. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्योनमः।
18. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्योनमः।
19. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
20. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
21. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्योनमः।
22. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यनमः।
23. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कुमुदविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्योनमः।

24. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सरित्विदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
25. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
26. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
27. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
28. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
29. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
30. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
31. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
32. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
33. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः
34. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

।।समाप्तं।।

जंबूद्वीप पूजा

– दोहा –

स्वयंसिद्ध यह द्वीप है, जंबूद्वीप महान।
सब द्वीपों में है प्रथम, अनुपम रत्न निधान।।1।।

इसमें शाश्वत जिन भवन, अट्ठत्तर अभिराम।
तीर्थंकर जिन केवली, साधु शील गुण खान।।2।।

इन सब की पूजा करूँ, आत्मशुद्धि के हेतु।
जिन पूजा चिंतामणी, मन चिंतित फल देत।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक – शंभु छंद

सुर सरिता का उज्ज्वल जल ले, कंचन झारी भर लाया हूँ।
भव भव की तृषा बुझाने को, त्रय धारा देने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अष्ट गंध सुरभित लेकर, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव भव संताप मिटाने औ, समता रस पीने आया हूँ।।

इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि किरणों सम उज्ज्वल तंदुल, धोकर थाली भर लाया हूँ।
निज आतम गुण के पुंज हेतु, यह पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुवलय बेला वर मौलसिरी, मचकुन्द कमल ले आया हूँ।
शृंगार हार कामारिजयी, जिनवर पद भजने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर ताजे, पकवान बनाकर लाया हूँ।
निज आतम अनुभव चखने को, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योती के जलते ही, अज्ञान अंधेरा भगता है।
इस हेतू से दीपक पूजा , करते ही ज्ञान चमकता है।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन में वर धूप खेय, दशदिश में धूम उठे भारी।
बहु जनम जनम के संचित भी, दुःखकर सब कर्म जलें भारी।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर आम्र बिजौरा नींबू औ, गन्ना मीठा ले आया हूँ।
शिव कांता सत्वर वरने की, बस आशा लेकर आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत फूल चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
तुम चरणों अर्घ चढ़ा करके, भव संकट हरने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिन मंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

क्षीरोदधि समश्वेत, उज्ज्वल जल ले भृंग में।
श्री जिनचरण सरोज, धारा देते भव मिटे।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

सुरतरु के सुम लाय, प्रभु पद में अर्पण करूँ।
काम देव मद नाश, पाऊँ आनन्द धाम मैं।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जयमाला

परम ज्योति परमात्मा, सकल विमल चिद्रूप।
जिनवर गणधर साधुगण, नमूँ नमूँ निजरूप।।1।।

–शंभु छंद–

जय जय सुमेरुगिरि के जिनगृह सोलह शाश्वत हैं रत्नमयी।
जय जय जिनमंदिर चारों ही, गजदंतगिरी के स्वर्णमयी।।
जय जय जंबूतरु शाल्मलि के, दो जिनमंदिर महिमाशाली।
जय जय वक्षारगिरि के भी, सोलह जिनगृह गरिमाशाली।।2।।

जय जय चौंतिस विजयारध के चौंतिस जिनमंदिर सुखकारी।
जय जय छह कुल पर्वत के भी छह जिनगृह भव भव दुःखहारी।।
ये जंबूद्वीप के अठत्तर, जिनमंदिर अकृत्रिम सुन्दर।
प्रतिजिनगृह में जिन प्रतिमाएं, हैं इक सौ आठ कही मनहर।।3।।

मेरू के पांडुक वन में चउ, विदिशा में चार शिलाएं हैं।
तीर्थंकर के जन्माभिषेक से, पावन पूज्य शिलायें हैं।।
इस भरत और ऐरावत में, होते हैं चौबिस तीर्थंकर।
केवलि श्रुतकेवली गणधर मुनि, साधुगण होते क्षेमंकर।।4।।

उनके कल्याणक से पवित्र, पृथिवी पर्वत भी तीर्थ बने।
जो उनकी पूजा करते हैं, उनके मन वांछित कार्य बनें।।
बत्तीस विदेह के तीर्थंकर, सीमंधर युगमंधर स्वामी।
बाहु सुबाहु जिन विहरमाण, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।।5।।

उन सर्व विदेहों में संतत, तीर्थंकर होते रहते हैं।
केवलज्ञानी चारणऋद्धि, मुनिगण वहाँ विचरण करते हैं।।
आकाशगमन करने वाले, ऋषिगण मेरु पर जाते हैं।
निज आत्म सुधारस स्वादी भी, जिनवंदन कर हर्षाते हैं।।6।।

इस जंबूद्वीप के अठहत्तर, शाश्वत जिन मंदिर को वंदन।
जितने भी कृत्रिम जिनगृह हों उन सबको भी शत शत वंदन।।

जितने तीर्थंकर हुए यहाँ, हो रहे और भी होवेंगे।
उन सबको मेरा वंदन है, वे मेरा कलिमल धोवेंगे।।7।।

आचार्य उपाध्याय साधूगण, जो भी इन कर्मभूमियों में।
चिन्मय आत्मा को ध्याते हैं, सुस्थिर होकर निज आत्मा में।।
वे घाति चतुष्टय घात पुनः, अर्हंत अवस्था पाते हैं।
इस कर्मभूमि से ही फिर वे, भगवान सिद्ध बन जाते हैं।।8।।

–दोहा–

पंच परम गुरु जिनधरम, जिनवाणी जिन गेह।
जिन प्रतिमा को नित नमूँ, 'ज्ञानमती' धर नेह।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।।

–दोहा–

जंबूद्वीप की अर्चना, करे विघ्न घन चूर।
सर्व अमंगल दूर कर, भरे सौख्य भरपूर।।10।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

तर्ज-जिस गली में.....

चल पड़े जिस तरफ दो कदम मात के,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।
पड़ गई दृष्टि जिस तीर्थ पर मात की,
कोटि दृष्टी में वे छा गए देश की।।टेक.।।
मुक्तिपथ पर चली जब वो कच्ची कली,
फूल बन बालसतियों की बगिया खिली।
फूल बन.....
क्वांरी कन्याओं के खुल गए रास्ते, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े.।।1।।
लेखनी ने लिखे सैकड़ों ग्रंथ जब,
अन्य माताओं ने भी लिखे ग्रंथ तब।।
अन्य माताओं.....
ज्ञानज्योति के अब खुल गए रास्ते, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े।।2।।
तीर्थ उद्धार की प्रेरिका बन गईं,
मंत्र 'अर्हम्' की ये देशना बन गईं।
मंत्र अर्हम्.....
दे गईं नव कृती रास्ते रास्ते, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े.।।3।।
पार्श्वप्रभु के महोत्सव की दी प्रेरणा,
जन्मभूमि बनारस में उत्सव मना।।
जन्मभूमि.....
ऐसे उत्सव चलें सब शहर ग्राम में, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े।।4।।
''चन्दनामति'' ये चैतन्य तीरथ बनीं,
जैन संस्कृति की सचमुच ये कीरत बनीं।
जैन.....
भक्त इनके सदा भक्ति में नाचते,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े.।।5।।